

॥ ॐ नमो गङ्गायै ॥

गंगा पूजन बोधिका



माँ गंगा का माहात्म्य, सम्पूर्ण पूजन-विधि,
स्तोत्र एवं आरती

श्री शिवबोध जी

SHIVBODH TRUST

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो गङ्गायै ॥

गंगा पूजन बोधिका

माँ गंगा का माहात्म्य, सम्पूर्ण पूजन-विधि,
स्तोत्र एवं आरती

गंगावतरण की कथा, शास्त्रों में गंगा-महिमा, पूजन की पूर्व-तैयारी,
गणेश-गौरी पूजन, कलश-स्थापन, माता गंगा का षोडशोपचार पूजन,
अष्टोत्तरशतनामावली, प्रमुख स्तोत्र तथा गंगा दशहरा की विधि
(मूल संस्कृत एवं सरल हिंदी अर्थ सहित)

लेखक

श्री शिवबोध जी

SHIVBODH TRUST

भूमिका

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अर्थ : हे गङ्गे, यमुने, गोदावरि, सरस्वति, नर्मदे, सिन्धु और कावेरि! आप सब इस जल में निवास करें।

हिमालय की बर्फीली चोटियों से उतरकर सागर में मिलने तक गंगा की जो अविरल धारा बहती है, वह भारत के लोक-मन के लिए केवल एक नदी नहीं है। वह जीवन है, आस्था है और मोक्ष का द्वार है। हमारे यहाँ जन्म के संस्कार से लेकर अंतिम यात्रा तक गंगाजल साथ रहता है। घर के छोटे-से पात्र में रखा गंगाजल भी हमें यह भरोसा देता है कि माँ पास ही हैं।

पुराण बताते हैं कि गंगा भगवान विष्णु के चरणों से निकलीं, ब्रह्मा के कमण्डलु में रहीं, शिव की जटाओं में समाई और भगीरथ के तप से धरती पर आई। इसीलिए उनकी पूजा केवल एक कर्मकाण्ड नहीं है; यह अपने मन को निर्मल करने और अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की साधना है।

गुरुकुल के दिनों में मैं प्रतिदिन गंगा-तट पर पूजन होते देखता था। तभी यह अनुभव हुआ कि सामान्य श्रद्धालु के पास ऐसी कोई सरल और क्रमबद्ध पुस्तिका नहीं है जिसमें गंगा-पूजन की पूरी विधि शुद्ध मंत्रों और सरल अर्थ के साथ एक ही स्थान पर मिल जाए। इस पुस्तक का उद्देश्य वही कमी पूरी करना है।

इस पुस्तक में क्या है

- **अध्याय 1** में गंगा की उत्पत्ति, राजा सगर और भगीरथ की कथा, गंगावतरण का आध्यात्मिक संदेश तथा वेद-पुराणों के चुने हुए श्लोक हैं।
- **अध्याय 2 से 5** में पूजन का पूरा क्रम है : पूर्व-तैयारी, पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन, संकल्प, गणेश-गौरी पूजन, कलश-स्थापन और अंत में माता गंगा का षोडशोपचार पूजन।
- **अध्याय 6 और 7** में गंगा जी की अष्टोत्तरशतनामावली, आरती तथा ब्रह्मवैवर्तपुराण, आदि शंकराचार्य और गोस्वामी तुलसीदास जी के स्तोत्र अर्थ सहित हैं।
- **अध्याय 8** में स्कन्दपुराण के अनुसार गंगा दशहरा की विधि और दशहरा-स्तोत्र है।
- **परिशिष्ट** में सामग्री की एकत्र सूची और घर पर किए जाने वाले संक्षिप्त गंगा-पूजन का एक-पृष्ठीय क्रम है।

पुस्तक का उपयोग कैसे करें

यदि आप गंगा-तट पर हैं, तो माँ गंगा का पूजन सीधे धारा के सम्मुख करें। यदि घर में हैं, तो गंगाजल से भरे कलश को माँ गंगा का प्रतीक मानकर उसी विधि से पूजन करें। समय कम हो, तो परिशिष्ट का संक्षिप्त क्रम पर्याप्त है। विशेष अवसरों पर, जैसे गंगा दशहरा, गंगा सप्तमी, कार्तिक पूर्णिमा या मकर संक्रान्ति पर, पूरा विधान करें। प्रत्येक मंत्र के साथ उसका अर्थ भी दिया गया है, ताकि मंत्र बोलते समय मन भी उसके भाव में रहे।

इस संस्करण के विषय में

यह पुस्तक पहली बार जून 2024 में ई-पुस्तक के रूप में आई थी। इस दूसरे संस्करण में पूरी पुस्तक नए सिरे से लिखी और सजाई गई है। सभी पौराणिक श्लोकों को उनके मूल ग्रन्थों, जैसे स्कन्दपुराण (काशीखण्ड), विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, नारदपुराण और ब्रह्मवैवर्तपुराण, से मिलाकर शुद्ध किया गया है; वैदिक मंत्रों का पाठ शुक्ल यजुर्वेद और

ऋग्वेद के अनुसार सुधारा गया है; पूजन-क्रम को व्यवस्थित किया गया है और गंगा दशहरा का अध्याय स्कन्दपुराण के मूल विधान के अनुसार नया जोड़ा गया है।

माँ गंगा की कृपा से यह छोटा-सा प्रयास आपके घर और मन तक पहुँचे, और उनकी निर्मलता हम सबके जीवन में बहती रहे। यही मेरी प्रार्थना है।

— श्री शिवबोध जी

वाराणसी

अनुक्रमणिका

लेखक-परिचय	5
भूमिका	6
मंगलाचरण	12
अध्याय 1 : गंगा-माहात्म्य : अवतरण की कथा	14
1. त्रिपथगा, विष्णुपदी और माँ	14
2. दिव्य उद्गम	15
3. राजा सगर और साठ हज़ार पुत्र	15
4. अंशुमान और दिलीप का प्रयास	16
5. भगीरथ की तपस्या	17
6. गंगावतरण और भागीरथी की यात्रा	17
7. गंगावतरण का संदेश	18
8. शास्त्रों में गंगा-महिमा : चुने हुए श्लोक	18
अध्याय 2 : पूजन की पूर्व-तैयारी एवं प्रारम्भिक कर्म	24
1. पूजन से पहले की तैयारी	24
2. पवित्रीकरण	25
3. आचमन	26
4. आसन-शुद्धि	26
5. शिखा-बन्धन	26
6. पवित्री-धारण	27
7. भूमि-वन्दन	27
8. तिलक	28

9. दीप-प्रज्वलन	28
10. शंख एवं घण्टा पूजन	29
11. स्वस्तिवाचन	29
12. मंगल-श्लोक	31
13. संकल्प	34
अध्याय 3 : श्री गणेश-गौरी पूजन (षोडशोपचार)	36
1. ध्यान और आवाहन	36
2. आसन, पाद्य, अर्घ्य और आचमन	38
3. स्नान और पञ्चामृत	39
4. वस्त्र से पुष्प तक	41
5. धूप, दीप, नैवेद्य और ऋतुफल	44
6. ताम्बूल, दक्षिणा, आरती और प्रार्थना	45
अध्याय 4 : कलश-स्थापन एवं वरुण-पूजन	47
1. भूमि-पूजन और धान्य-स्थापन	47
2. कलश-स्थापन और जल	48
3. कलश में द्रव्य डालना	48
4. वरुण-आवाहन और तीर्थों का आवाहन	51
5. कलश-पूजन और प्रार्थना	52
अध्याय 5 : माता गंगा का षोडशोपचार पूजन	54
1. ध्यान, आवाहन और आसन	55
2. पाद्य, अर्घ्य और आचमन	56
3. स्नान	57
4. वस्त्र, गन्ध, अक्षत और सौभाग्य-द्रव्य	59
5. पुष्प और अङ्ग-पूजा	60
6. धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल और दक्षिणा	62
7. आरती, मन्त्र-पुष्पाञ्जलि और प्रदक्षिणा	63
8. क्षमा-प्रार्थना, समर्पण और विसर्जन	67

अध्याय 6 : श्री गंगा अष्टोत्तरशतनामावली एवं आरती	69
1. अष्टोत्तरशतनामावली (108 नाम)	69
2. श्री गंगा जी की आरती	71
अध्याय 7 : स्तोत्र-संग्रह	73
1. गंगा-ध्यान (ब्रह्मवैवर्तपुराण)	73
2. श्री विष्णुपदी-स्तोत्र (ब्रह्मवैवर्तपुराण)	75
3. श्री गंगास्तोत्र (आदि शंकराचार्य विरचित)	81
4. विनय-पत्रिका का गंगा-पद (गोस्वामी तुलसीदास)	85
अध्याय 8 : गंगा दशहरा : विधि एवं स्तोत्र	87
1. दशहरा की शास्त्रीय विधि (स्कन्दपुराण)	87
2. श्री गंगा दशहरा-स्तोत्र	92
3. आज के समय में दशहरा कैसे मनाएँ	97
परिशिष्ट : सामग्री, संक्षिप्त पूजन एवं पर्व	99
1. पूजन-सामग्री की एकत्र सूची	99
2. संक्षिप्त गंगा-पूजन (एक दृष्टि में)	100
3. गंगा से जुड़े प्रमुख पर्व	101
समापन एवं निवेदन	103
सन्दर्भ-ग्रन्थ	103

मंगलाचरण

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ गुरवे नमः ॥

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्या ।

असिक्न्या मरुद्वधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥

— ऋग्वेद 10.75.5 (नदी-सूक्त)

अर्थ : हे गंगे, यमुने, सरस्वति और शुतुद्रि (सतलुज)! परुष्णी (रावी) के साथ मेरी इस स्तुति को स्वीकार करो। हे मरुद्वधा, असिक्नी (चिनाब) के साथ; हे आर्जीकीया, वितस्ता (झेलम) और सुषोमा के साथ, मेरी प्रार्थना सुनो।

ऋग्वेद के इस प्रसिद्ध नदी-सूक्त में नदियों की गणना गंगा से आरम्भ होती है। वैदिक काल से ही गंगा को सब नदियों में प्रथम स्थान मिला है।

जैसे तैं न मोकों कहूँ नेकहू डरात हुतो,
ऐसो अब हौं हूँ तोसों नेकहू न डरिहौं।
कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो तौ,
उमंडि करि तोसों भुजदंड ठोंकि लरिहौं॥
चलो चलु चलो चलु बिचलु न बीच ही तैं,
कीच बीच नीच तौ कुटुंब को कचरिहौं।
एरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं,
गंगा के कछार में पछारि छार करिहौं॥

— कविवर पद्माकर, 'गंगालहरी'

भावार्थ : कवि अपने पापों को ललकारते हुए कहते हैं — “अरे पाप! जिस तरह तू अब तक मुझसे ज़रा भी नहीं डरता था, उसी तरह अब मैं भी तुझसे ज़रा भी नहीं डरूँगा। यदि

तू प्रचण्ड होकर सामने आया, तो मैं उमंग से भुजाएँ ठोंककर तुझसे लड़ूँगा। चल, आगे चल, बीच में डगमगा मत; कीचड़ में पड़े ऐ नीच, मैं तेरे पूरे कुटुम्ब को कुचल डालूँगा। अरे दगाबाज़, मेरे अपार पाप! मैं तुझे गंगा के कछार (किनारे की रेती) पर पटककर राख कर दूँगा।” अर्थात् माँ गंगा की शरण में आ जाने पर कोई भी पाप भक्त को डरा नहीं सकता।

॥ ॐ नमो गङ्गायै विश्वरूपिण्यै नारायण्यै नमो नमः ॥

गंगा-माहात्म्य : अवतरण की कथा

1. त्रिपथगा, विष्णुपदी और माँ

भारत की सामूहिक स्मृति में गंगा केवल जल की एक धारा नहीं हैं। वे संस्कारों, स्मृतियों और अटूट श्रद्धा का वह स्वर हैं, जो हिमालय की ठंडी साँसों से जन्म लेकर करोड़ों हृदयों तक पहुँचता है और मन का मैल तक धो देता है। ऋषियों ने उन्हें त्रिपथगा कहा, क्योंकि वे स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल, तीनों लोकों में बहती हैं। पुराणों ने उन्हें विष्णुपदी कहा, क्योंकि वे भगवान विष्णु के चरणों से निकली हैं। और लोक ने उन्हें माँ कहकर पुकारा, क्योंकि माँ ही अपने आँचल में संतान के सारे दुःख और घाव छिपाकर उसे शान्ति देती है।



काशी के घाट पर माँ गंगा को अर्घ्य देते हुए बटुक

2. दिव्य उद्गम

श्रीमद्भागवत की कथा है कि वामन अवतार में भगवान ने त्रिविक्रम रूप धारण कर तीन पगों में तीनों लोक नाप लिए। जब उनका एक चरण ब्रह्माण्ड के ऊपरी छोर तक पहुँचा, तो ब्रह्मा जी ने अपने कमण्डलु के जल से उस चरण का प्रक्षालन किया। भगवान के चरण को धोकर जो पवित्र जल बहा, वही गंगा बना। एक अन्य वर्णन के अनुसार भगवान के बाएँ पैर के अँगूठे के नख से ब्रह्माण्ड का आवरण भिद गया और उस छिद्र से बाहर का दिव्य जल भीतर उतर आया। दोनों कथाओं का सार एक है : गंगा भगवान के चरणों का प्रसाद हैं।

यह दिव्य धारा पहले स्वर्ग में मन्दाकिनी बनकर बहती रही। उसका वेग इतना प्रचण्ड था कि पृथ्वी उसे सह नहीं सकती थी। उसे धरती तक लाने के लिए एक मनुष्य की पीढ़ियों लंबी तपस्या और स्वयं महादेव की करुणा चाहिए थी। वही कथा इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर से आरम्भ होती है।

3. राजा सगर और साठ हज़ार पुत्र

अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश के प्रतापी राजा सगर राज्य करते थे। भगवान श्रीराम इसी वंश में आगे चलकर प्रकट हुए। राजा सगर की दो रानियाँ थीं, केशिनी और सुमति, पर बहुत समय तक उन्हें संतान नहीं हुई। पुत्र की कामना से राजा दोनों रानियों के साथ हिमालय पर तप करने गए। उनके तप से प्रसन्न होकर महर्षि भृगु ने वर दिया कि एक रानी से वंश चलाने वाला एक पुत्र होगा और दूसरी से साठ हज़ार पुत्र।

केशिनी ने एक पुत्र माँगा और उन्हें असमंजस नामक पुत्र हुआ। सुमति ने साठ हज़ार पुत्र माँगे। समय आने पर सुमति ने तुम्बी (लौकी) के आकार का एक गर्भ-पिण्ड जन्म दिया, जिससे साठ हज़ार पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुए। वे बलवान तो थे, पर अहंकार भी उतना ही बड़ा था। असमंजस का स्वभाव क्रूर निकला, इसलिए राजा ने उन्हें राज्य से निकाल दिया; किंतु उनके पुत्र अंशुमान बड़े विनम्र, धर्मपरायण और सबके प्रिय हुए।

कुछ समय बाद राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ आरम्भ किया। देवराज इन्द्र ने छल से यज्ञ का घोड़ा चुरा लिया। राजा ने अपने साथ हजार पुत्रों को आज्ञा दी कि चाहे पूरी पृथ्वी खोदनी पड़े, घोड़ा खोजकर लाओ। राजकुमार पृथ्वी को खोदते हुए पाताल तक जा पहुँचे। परम्परा कहती है कि उनके खोदे हुए विशाल गर्त में ही आगे चलकर सागर भरा, इसलिए सागर का नाम 'सगर' से जुड़ा है।

पाताल में उन्होंने देखा कि यज्ञ का घोड़ा महर्षि कपिल के आश्रम के पास चर रहा है। कपिल मुनि, जिन्हें भगवान विष्णु का अंश माना जाता है, गहरे ध्यान में थे। अहंकार में अंधे राजकुमारों ने बिना सोचे उन्हें ही चोर मान लिया और अपशब्द कहते हुए उन पर टूट पड़े। ध्यान भंग होते ही मुनि के तेज से प्रकट हुई अग्नि में पल भर में सारे राजकुमार भस्म हो गए। विधिवत् अंतिम संस्कार न होने से उनकी आत्माएँ मुक्ति के लिए भटकती रहीं।

4. अंशुमान और दिलीप का प्रयास

पुत्रों के न लौटने पर राजा सगर ने अपने पौत्र अंशुमान को भेजा। अंशुमान अपने चाचाओं के विपरीत अत्यंत विनम्र थे। उन्होंने कपिल मुनि को दण्डवत् प्रणाम कर उनकी स्तुति की। प्रसन्न होकर मुनि ने घोड़ा लौटा दिया और बताया कि इन साठ हजार आत्माओं का उद्धार तभी होगा जब स्वर्ग की गंगा का जल इनकी भस्म को स्पर्श करेगा। (वाल्मीकि रामायण में यही बात अंशुमान को गरुड़ जी बताते हैं, जो सुमति के भाई और राजकुमारों के मामा थे।)

घोड़ा लाकर अंशुमान ने पितामह का यज्ञ पूर्ण कराया। राजा सगर के बाद अंशुमान ने राज्य सँभाला और अंत में राज्य छोड़कर गंगा को धरती पर लाने के लिए हिमालय में लंबा तप किया, पर सफल न हो सके। उनके पुत्र दिलीप ने भी जीवन भर इसी चिंता में प्रयत्न किया, किंतु लक्ष्य अधूरा ही रहा।

5. भगीरथ की तपस्या

दिलीप के पुत्र भगीरथ ने पूर्वजों की यह कथा सुनी तो दृढ़ प्रतिज्ञा की कि यह कार्य वे पूरा करके रहेंगे। राज्य मंत्रियों को सौंपकर वे गोकर्ण तीर्थ गए और ब्रह्मा जी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तप आरम्भ किया। वे भुजाएँ ऊपर उठाए, पंचाग्नि के बीच खड़े रहते, महीने में एक बार आहार लेते और इन्द्रियों को पूरी तरह वश में रखते।

अंत में ब्रह्मा जी प्रकट हुए और गंगा को पृथ्वी पर भेजने का वर दिया। साथ ही उन्होंने सावधान किया कि स्वर्ग से गिरती गंगा का वेग पृथ्वी नहीं सह पाएगी; उसे केवल भगवान शिव ही धारण कर सकते हैं। तब भगीरथ ने महादेव को प्रसन्न करने के लिए फिर तप किया। वे एक वर्ष तक केवल पैर के अँगूठे के बल खड़े रहे, केवल वायु पर रहे और मन को शिव में लगाए रहे। भोलेनाथ प्रसन्न हुए और गंगा को अपने सिर पर धारण करने का वचन दिया।

6. गंगावतरण और भागीरथी की यात्रा

गंगा प्रचण्ड वेग से आकाश से उतरी। उनके मन में यह भाव भी था कि वे शिव को भी अपने प्रवाह में बहा ले जाएँगी। महादेव ने उनका यह अभिमान जान लिया और उन्हें अपनी जटाओं के जाल में ऐसा बाँध लिया कि वे बहुत वर्षों तक उन्हीं जटाओं में भटकती रहीं और बाहर का मार्ग न पा सकीं। लक्ष्य को इतना निकट देखकर भी दूर जाते देख भगीरथ ने फिर शिव की आराधना की। तब शिव ने अपनी जटा की एक लट खोलकर गंगा को बिन्दुसरोवर की ओर छोड़ दिया।

वहाँ से गंगा सात धाराओं में बँटी। ह्यादिनी, पावनी और नलिनी पूर्व की ओर गई; सुचक्षु, सीता और सिन्धु पश्चिम की ओर; और सातवीं धारा राजा भगीरथ के रथ के पीछे-पीछे चली। भगीरथ के पीछे चलने के कारण ही यह धारा **भागीरथी** कहलाई।

मार्ग में गंगा महर्षि जह्नु के आश्रम से होकर निकलीं और उनकी यज्ञ-भूमि बहा ले गई। क्रुद्ध होकर महर्षि ने सारी धारा पी ली। देवताओं और भगीरथ की प्रार्थना पर उन्होंने गंगा

को अपने कानों से फिर बाहर निकाला; तभी से गंगा जहु की पुत्री **जाह्नवी** कहलाती हैं। आगे चलकर गंगा सागर तक पहुँचीं और वहाँ से पाताल में सगर-पुत्रों की भस्म तक गई। जैसे ही उनके जल ने उस भस्म को छुआ, साठ हज़ार आत्माएँ शुद्ध होकर स्वर्ग चली गई। जहाँ गंगा सागर में मिलीं, वह स्थान आज भी गंगासागर तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। पितृ-ऋण से मुक्ति का यह क्षण भारतीय चेतना में सदा के लिए अंकित हो गया।

7. गंगावतरण का संदेश

गंगा की कथा केवल एक नदी के उद्गम की कहानी नहीं है। यह तप, त्याग, संकल्प और मोक्ष की जीवित गाथा है। इसमें राजा सगर के पुत्रों का अहंकार भी है और भगीरथ की निःस्वार्थ भक्ति भी। वाल्मीकि रामायण, महाभारत और अनेक पुराणों में वर्णित यह आख्यान बताता है कि अहंकार का पतन निश्चित है, सच्ची और अटूट निष्ठा में आकाश को भी धरती पर उतार लाने की शक्ति है, और पूर्वजों के प्रति कर्तव्य निभाना परम धर्म है।

आज भी किसी बड़े और लगातार किए गए प्रयास को हम “भगीरथ प्रयत्न” कहते हैं। जहाँ ज्ञान और कठोर तप के मार्ग सबके लिए सरल नहीं थे, वहाँ इस कथा ने भक्ति और तीर्थ के माध्यम से मुक्ति को जन-सुलभ बना दिया। जब भी मन पर धूल जमने लगे, अपने भीतर एक छोटा-सा भगीरथ खड़ा किया जा सकता है; और गंगा, चाहे बाहर बहती हों या भीतर, हर बार उसी पवित्रता से उतर आती हैं।

आधार : वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 38–44; श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 5.17, 8.21 एवं 9.8–9; विष्णुपुराण 2.8।

8. शास्त्रों में गंगा-महिमा : चुने हुए श्लोक

नीचे वेद, गीता और पुराणों के कुछ प्रमुख श्लोक मूल ग्रन्थों से मिलाकर दिए गए हैं। इन्हें पूजन के समय या नित्य पाठ में भी पढ़ा जा सकता है।

1. श्रीमद्भगवद्गीता (10.31)

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।

झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥

अर्थ : भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं — पवित्र करने वालों में मैं वायु हूँ, शस्त्रधारियों में राम हूँ, जलचरों में मगर हूँ और नदियों में मैं गंगा हूँ।

2. विष्णुपुराण (2.8.114-115)

भेदं चालकनन्दाख्यं यस्याः शर्वोऽपि दक्षिणम् ।

दधार शिरसा प्रीत्या वर्षाणामधिकं शतम् ॥

शम्भोर्जटाकलापाच्च विनिष्क्रान्तास्थिशर्कराः ।

प्लावयित्वा दिवं निन्ये या पापान् सगरात्मजान् ॥

अर्थ : गंगा की अलकनन्दा नामक दक्षिणी धारा को भगवान् शिव ने प्रेमपूर्वक सौ वर्ष से भी अधिक समय तक अपने सिर पर धारण किया। शिव की जटाओं से निकलकर जिस गंगा ने सगर के पापी पुत्रों की अस्थियों और भस्म को अपने जल में बहाकर उन्हें स्वर्ग पहुँचा दिया।

3. विष्णुपुराण (2.8.116)

स्नातस्य सलिले यस्याः सद्यः पापं प्रणश्यति ।

अपूर्वपुण्यप्राप्तिश्च सद्यो मैत्रेय जायते ॥

अर्थ : हे मैत्रेय! जिसके जल में स्नान करते ही पाप तुरंत नष्ट हो जाते हैं और उसी क्षण अपूर्व पुण्य की प्राप्ति होती है (वह गंगा हैं)।

4. विष्णुपुराण (2.8.120-122)

श्रुताऽभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीताऽवगाहिता ।
या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने दिने ॥
गङ्गा गङ्गेति यैर्नाम योजनानां शतेष्वपि ।
स्थितैरुच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम् ॥
यतः सा पावनायालं त्रयाणां जगतामपि ।
समुद्भूता परं तत्तु तृतीयं भगवत्पदम् ॥

अर्थ : जिनका नाम सुनने, जिनकी इच्छा करने, दर्शन करने, स्पर्श करने, जल पीने, स्नान करने और प्रतिदिन जिनका कीर्तन करने से ही प्राणी पवित्र हो जाते हैं; सैकड़ों योजन दूर बैठे लोग भी “गंगा-गंगा” नाम का उच्चारण करें, तो वह नाम उनके तीन जन्मों के पापों को नष्ट कर देता है। क्योंकि वे भगवान के उस परम तीसरे पद (चरण) से प्रकट हुई हैं, इसलिए तीनों लोकों को पवित्र करने में समर्थ हैं।

5. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.17)

कृते सर्वत्र तीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम् ।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गैव केवलम् ॥

अर्थ : सत्ययुग में सब स्थान तीर्थ थे, त्रेता में पुष्कर श्रेष्ठ था, द्वापर में कुरुक्षेत्र; और कलियुग में केवल गंगा ही (परम तीर्थ) हैं।

6. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.19)

ध्यानं कृते मोक्षहेतुस्तेतायां तच्च वै तपः ।
द्वापरे तद्वयं यज्ञाः कलौ गङ्गैव केवलम् ॥

अर्थ : सत्ययुग में ध्यान मोक्ष का साधन था, त्रेता में ध्यान और तप, द्वापर में ये दोनों तथा यज्ञ; और कलियुग में केवल गंगा ही मोक्ष का साधन हैं।

7. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.23)

गङ्गा हि सर्वभूतानामिहामुत्र फलप्रदा ।
भावानुरूपतो विष्णो सदा सर्वजगद्धिता ॥

अर्थ : (भगवान शिव कहते हैं) हे विष्णो! गंगा सभी प्राणियों को उनके भाव के अनुरूप इस लोक और परलोक में फल देती हैं और सदा समस्त जगत् का हित करती हैं।

8. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.49)

अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहनो हि यथा दहेत् ।
अनिच्छयापि संस्नाता गङ्गा पापं तथा दहेत् ॥

अर्थ : जैसे अनजाने में छू ली गई अग्नि भी जलाती ही है, वैसे ही अनिच्छा से किया गया गंगा-स्नान भी पापों को भस्म कर देता है।

9. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.59-60)

सूर्योदये तमांसीव वज्रपातभयान्नगाः ।
ताक्ष्येक्षणाद्यथा सर्पा मेघा वाताहता इव ॥
तत्त्वज्ञानाद्यथा मोहः सिंहं दृष्ट्वा यथा मृगाः ।
तथा सर्वाणि पापानि यान्ति गङ्गेक्षणात्क्षयम् ॥

अर्थ : जैसे सूर्योदय से अंधकार, वज्र के भय से पर्वत, गरुड़ को देखकर सर्प, हवा के झोंके से बादल, तत्त्वज्ञान से मोह और सिंह को देखकर हिरण भाग जाते हैं, वैसे ही गंगा के दर्शन मात्र से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

10. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड (पूर्वार्ध 27.71-73)

प्राणायामश्च तपसां मन्त्राणां प्रणवो यथा ।
धर्माणामप्यहिंसा च काम्यानां श्रीर्यथा वरा ॥
यथात्मविद्या विद्यानां स्त्रीणां गौरी यथोत्तमा ।
सर्वदेवगणानां च यथा त्वं पुरुषोत्तम ॥
सर्वेषामेव पात्राणां शिवभक्तो यथा वरः ।
तथा सर्वेषु तीर्थेषु गङ्गातीर्थं विशिष्यते ॥

अर्थ : जैसे तपों में प्राणायाम, मंत्रों में प्रणव (ॐ), धर्मों में अहिंसा, कामनाओं में लक्ष्मी, विद्याओं में आत्मविद्या, स्त्रियों में गौरी, देवताओं में हे पुरुषोत्तम आप, और दान के पात्रों में शिवभक्त श्रेष्ठ है, वैसे ही सब तीर्थों में गंगा-तीर्थ सबसे श्रेष्ठ है।

11. मत्स्यपुराण (106.54-56)

सर्वत्र सुलभा गङ्गा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा ।
गङ्गाद्वारे प्रयागे च गङ्गासागरसङ्गमे ॥
सर्वेषामेव भूतानां पापोपहतचेतसाम् ।
गतिमन्विष्यमाणानां नास्ति गङ्गासमा गतिः ॥
पवित्राणां पवित्रं च मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा ॥

अर्थ : गंगा सब जगह सुलभ हैं, पर तीन स्थानों पर दुर्लभ (अर्थात् विशेष पुण्यदायिनी) हैं : गंगाद्वार (हरिद्वार), प्रयाग और गंगासागर-संगम। पाप से दूषित चित्त वाले, सद्गति खोजते हुए सभी प्राणियों के लिए गंगा के समान कोई गति नहीं है। वे पवित्रों में भी पवित्र, मंगलों में भी मंगल हैं; महेश्वर के सिर से उतरी हुई, सब पापों को हरने वाली और कल्याणमयी हैं।

12. नारदपुराण, पूर्वभाग (6.29)

सेयं गङ्गा महापुण्या नदी भक्त्या निषेविता ।

मेषतौलिमृगार्केषु पावयत्यखिलं जगत् ॥

अर्थ : यह महापुण्यमयी गंगा नदी भक्तिपूर्वक सेवन करने पर, विशेषकर जब सूर्य मेष, तुला और मकर राशि में हों, सारे जगत् को पवित्र कर देती है।

13. नारदपुराण, पूर्वभाग (6.41)

गङ्गायमुनयोर्योगोऽधिकः काश्या अपि द्विज ।

यस्य दर्शनमात्रेण नरा यान्ति परां गतिम् ॥

अर्थ : हे द्विज! गंगा और यमुना का संगम (प्रयाग) काशी से भी अधिक माना गया है; उसके दर्शन मात्र से मनुष्य परम गति पाते हैं।

14. महाभारत, भीष्मपर्व 43 (गीता-माहात्म्य)

सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वदेवमयो हरिः ।

सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्ववेदमयो मनुः ॥

अर्थ : गीता सब शास्त्रों का सार है, श्रीहरि सब देवताओं के स्वरूप हैं, गंगा सब तीर्थों का स्वरूप हैं और मनु (मनुस्मृति) सब वेदों का सार है।